संसद के समक्ष अभिभाषण* – 28 मार्च 1977

लोक सभा	-	छठी लोक सभा
सत्र	-	छठे आम चुनाव के पश्चात् पहला सत्र
भारत के राष्ट्रपति	-	श्री बी.डी. जत्ती (कार्यवाहक)*
भारत के उपराष्ट्रपति	-	श्री बी.डी. जत्ती
भारत के प्रधानमंत्री	-	श्री मोरारजी देसाई
लोक सभा अध्यक्ष	-	डॉ. एन. संजीव रेड्डी

माननीय सदस्यगण,

मैं नई लोक सभा के सदस्यों को बधाई देता हूं और छठी संसद के संयुक्त अधिवेशन में आप सबका स्वागत करता हूं।

इस अवसर पर जब हम एक सौम्य और परिचित चेहरा नहीं देखते तो विचार हमारे भूतपूर्व राष्ट्रपति फख़रुद्दीन अली अहमद की ओर जाते हैं, वे एक वरिष्ठ राजनीतिज्ञ, विवेकपूर्ण सलाहकार, अनुभवी अगुवा तथा सज्जन पुरुष थे। आज हम उनके निधन पर शोक प्रकट करते हैं और बेगम आबिदा अहमद को अपनी हार्दिक संवेदनायें देते हैं।

अभी जो आम चुनाव हुआ है उससे प्रभावपूर्ण तथा निर्णायक ढंग से यह सिद्ध हो गया है कि जनता को अपनी ताकत, लोकतंत्रात्मक प्रक्रिया की जीवन-शक्ति, जिसकी जड़ जमी है, पर कितना भरोसा है। जनता ने प्रशासक के मनमानेपन तथा व्यक्ति-पूजा के अभ्युदय तथा गैर-संवैधानिक शक्ति केन्द्रों के विरुद्ध वैयक्तिक स्वतंत्रता, लोकतंत्र तथा विधि-नियम के पक्ष में अपना स्पष्ट निर्णय दिया है। यह चुनाव हमारी लोकतंत्रात्मक व्यवस्था की एक स्वस्थ दो-दलीय प्रणाली के विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील-पत्थर है।

मेरी सरकार जनता द्वारा दिए गए निर्णय को हर तरह से पूरा करने के लिए वचनबद्ध है। ऐसा करने में यह मान कर नहीं चला जाएगा कि जनता कुछ नहीं जानती और सरकार ही सभी उत्तर और हल जानती है। पिछले दो वर्षों में लोगों पर कई अत्याचार किए गए तथा उन्हें असीम कष्ट झेलने पड़े, और कई लोगों की तो जानें भी गईं। इस दु:खद अनुभव के कारण यह बात कहनी पड़ी।

* भारत के राष्ट्रपति के रूप में कार्य कर रहे उपराष्ट्रपति।

माननीय सदस्यगण, नई सरकार ने तीन दिन पहले कार्यभार सम्भाला है। अभी जो ये कई उपाय करना चाहती है उनकी विस्तृत योजना बनाने का अभी समय नहीं मिला है। ये उपाय इस वर्ष यथासमय किए जाएंगे और आपके सामने पेश किए जाएंगे। पर, फिर भी, कई कामों पर तत्काल ध्यान देना है और सरकार इन्हें तुरन्त अपने हाथ में लेगी।

सबसे पहला काम है जनता की मौलिक स्वतंत्रताओं और नागरिक अधिकारों पर रोक हटाना, जिससे विधि-नियम तथा प्रेस की स्वतंत्रता का अधिकार फिर से स्थापित हो। 1971 में जिस बाह्य आपातकाल की घोषणा की गई थी उसे मेरे द्वारा कल रद्द कर दिया गया है। सरकार निम्नलिखित कदम उठाएगी:—

(i) पिछले दो सालों में आंतरिक सुरक्षा कानून का जो घोर दुरुपयोग हुआ, उसकी पूरी समीक्षा की जाएगी, जिससे इसे रद्द किया जा सके और इस बात की जांच की जा सके कि न्यायालयों में जाने के अधिकार को बरकरार रखते हुए देश की सुरक्षा तथा आर्थिक अपराधों से निपटने के लिए वर्तमान कानून को और सशक्त बनाने की आवश्यकता है या नहीं।

(ii) इस आशय का कानून बनाया जाएगा जिससे यह सुनिश्चय हो सके कि किसी भी राजनीतिक अथवा सामाजिक संगठन पर पाबंदी न लगाई जाए, जब तक पर्याप्त आधार न हों और इस संबंध में न्यायिक जांच की जा चुकी हो।

(iii) आपत्तिजनक सामग्री के प्रकाशन पर रोक संबंधी अधिनियम को रद्द किया जाएगा। विधायिकाओं की कार्यवाहियों को छापने का प्रेस का अधिकार फिर से लौटाया जाएगा।

(iv) जन प्रतिनिधित्व अधिनियम संशोधन में भ्रष्ट आचरणों की जो व्याख्या की गई है तथा जिन कुछ व्यक्तियों के चुनाव अपराध को न्यायालयों की संवीक्षा से बाहर रखकर संरक्षण दिया गया है, उन्हें रद्द किया जाएगा।

इस वर्ष के दौरान, जनता तथा संसद, संसद तथा न्यायपालिका, न्यायपालिका तथा कार्यपालिका, राज्य तथा केन्द्र, नागरिक तथा सरकार में संतुलन फिर से लाने के लिए, जिसकी व्यवस्था हमारे संविधान के निर्माताओं ने की थी, संविधान में संशोधन करने की एक व्यापक योजना आपके सामने प्रस्तुत की गयी।

इसके अंतर्गत अनुच्छेद 352 (तीन सौ बावन) के प्रावधानों का संशोधन शामिल है, जिनसे आपातकाल की घोषणा करने के अधिकार तथा सम्बद्ध अनुच्छेदों के दुरुपयोग पर रोक रखी जा सके, जिससे कि इस बात का निश्चय हो सके कि राष्ट्रपति शासन संविधान में उल्लिखित उद्देश्यों के अनुसार लागू हो, न कि किन्ही बाहरी उद्देश्यों से।

पिछले कुछ समय से एक जो गम्भीर स्थिति उत्पन्न हुई है वह यह है कि सूचना तथा जनसंपर्क माध्यमों की स्वतंत्रता तथा निष्पक्षता खत्म हो गई है। मेरी सरकार ऐसे उपाय करेगी जिनसे इन माध्यमों को लोकतंत्र में उचित स्थान दिलाया जा सके। ऐसे उपाय भी किए जायेंगे जिनसे यह सुनिश्चय हो सके कि आकाशवाणी, दूरदर्शन, फिल्म प्रभाग तथा अन्य सरकारी माध्यम उचित तथा निष्पक्ष तरीके से काम करें।

पिछले साल इस देश के कई इलाकों में परिवार नियोजन का कार्यक्रम जिस प्रकार से चलाया गया उससे जनता में जितना आक्रोश देखा गया वह पहले कभी नहीं देखा गया। इससे इस कार्यक्रम को, जो राष्ट्र के कल्याण के लिए महत्वपूर्ण है, भारी नुकसान पहुंचा। परिवार नियोजन एक ऐच्छिक कार्यक्रम तथा एक व्यापक नीति के अभिन्न अंग के रूप में जोरदार ढंग से चलाया जाएगा, जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, मातृ-केन्द्र और बाल कल्याण, परिवार-कल्याण, महिला-अधिकार तथा पौष्टिक आहार शामिल हैं।

आर्थिक क्षेत्र में सरकार 10 वर्षों की अवधि में गरीबी हटाने के लिए वचनबद्ध है। ग्रामीण क्षेत्र की अपेक्षाकृत उपेक्षा से अर्थव्यवस्था में एक भयानक असंतुलन उत्पन्न हुआ, जिससे लोग गांव से शहरों की ओर जाने लगे हैं। किसानों को अपने उत्पादन का उचित दाम नहीं मिला है। कृषि तथा संबद्ध विकासों के लिए विनियोजन बहुत ही अपर्याप्त है और गांवों की स्थिति सुधारने की आवश्यकता पर बहुत कम ध्यान दिया गया। एक लाख से ज्यादा गांवों में पीने के पानी जैसी प्राथमिक सुविधा भी नहीं है। मेरी सरकार रोजगार उन्मुख नीति अपनाएगी, जिसमें कृषि विकास, कृषि उद्योग, छोटे और कुटीर उद्योगों को, विशेष रूप से ग्रामीण इलाकों में प्राथमिकता मिल सके। ग्रामीण क्षेत्रों में न्यूनतम आवश्यकताओं के प्रावधानों तथा समग्र ग्रामीण विकास को भी ऊंची प्राथमिकता दी जाएगी। पंचवर्षीय योजना की यथासंभव समीक्षा की जाएगी। योजना की प्रक्रिया में फिर से प्राण संचार किया जायेगा और छठी पंचवर्षीय योजना पर अविलंब काम शुरू होगा। इस साल बाद में अंतिम बजट पेश करते समय उन आर्थिक कार्यक्रमों की घोषणा की जाएगी जिन्हें चलाने का प्रस्ताव है।

अब मैं वैदेशिक संबंधों पर आता हूं। मेरी सरकार उन सभी वायदों को निभाएगी जो पिछली सरकारें कर चुकी हैं। यह समानता और परस्पर सद्भाव के आधार पर सभी पड़ोसी तथा विश्व के अन्य देशों के साथ मैत्री भाव रखेगी और गुटनिरपेक्षता की सही नीति अपनाएगी। मुझे यह कहने में खुशी हो रही है कि मेरी सरकार अगले महीने के प्रारंभ में गुटनिरपेक्ष समन्वयात्मक ब्यूरो की बैठक की मेज़बानी करेगी। मेरी सरकार सभी विकासशील राष्ट्रों के साथ आर्थिक और तकनीकी सहयोग तथा संबंधों को भी मजबूत करने पर विशेष ध्यान देगी।

माननीय सदस्यगण, आपका वर्तमान अधिवेशन छोटा होगा, जिसमें वित्तीय मामलों— संघ की पूरक मांगों, राष्ट्रपति शासन के अंतर्गत राज्यों और आम बजट के संबंध में वोट ऑन एकाउन्ट, रेल बजट तथा राष्ट्रपति शासन के अधीन राज्यों के बजट पर तत्काल ध्यान देना होगा। आगामी महीनों में आपके सामने बहुत ही व्यस्त कार्यक्रम हैं। आज राष्ट्र को आपसे बहुत बड़ी अपेक्षा है और मेरा विश्वास है कि आप उन कार्यों को, जो आपके सामने सरकार द्वारा पेश किए जाएंगे, लगन और तत्परता से पूरा करने में अपना सहयोग देंगे। मैं इन कार्यों की ओर आपका आह्वान करता हूं और आपकी सफलता की कामना करता हूं।

जय हिन्द।

श्री बी.डी. जत्ती